अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु के संगठन की विधियाँ
(METHODS OF ORGANIZATION OF THE SUBJECT-MATTER OF ECONOMICS)

अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु को संगठित करने के लिए निम्नलिखित विधियों को अपनाया जा सकता है–

1. एकसमान केन्द्र विधि (Concentric Method)–यह विधि मनोविज्ञान के इस सिद्धान्त पर आधारित है कि बालक सर्वप्रथम समग्र या पूर्ण को जानता है और इसके बाद धीरे-धीरे उसके अंगों को जानता है। दूसरे शब्दों में, वह प्रारम्भ में पूर्ण वस्तुओं को ही जानता है, उसके अंगों को नहीं। इसके अनुसार अर्थशास्त्र की सम्पूर्ण सामग्री को पढ़ाया जाता है। प्रत्येक स्तर पर उसकी पीठिका समान रहती है। परन्तु अन्य वर्षों में उसकी रूपरेखाओं को विस्तृत बनाया जाता है। इस प्रकार इस विधि के अनुसार अर्थशास्त्र की पाठ्यवस्तु की पीठिका समान रहेगी, परन्तु ज्ञान के वृत्तों का आयाम निरन्तर बढ़ता चलेगा।

इस विधि के अनुसार अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु को संगठित करने से निम्नलिखित लाभ हो सकते हैं–

(1) यह 'सरल से जटिल' तथा 'पूर्ण से अंश' की ओर बढ़ती है।

(2) यह छात्रों की रुचि को जाग्रत करती है।

(3) इसके अनुसार पुनरावृत्ति सरल हो जाती है।

(4) यह सम्पूर्ण पाठ्य-विवरण को निर्धारित समय में पूरा कराने में सहायक है।

(5) यह बालक के मानसिक विकास को ध्यान में रखकर पाठ्य-वस्तु का संगठन करती है।

2. प्रकरण विधि (Topical Method)–इसके द्वारा अर्थशास्त्र की पाठ्यवस्तु को प्रकरणों में संगठित किया जाता है। ये प्रकरण एक-दूसरे से सम्बन्धित रहते हैं। ये प्रकरण छात्रों की आयु, योग्यता तथा रुचियों के आधार पर अर्थशास्त्र का पाठ्य-विवरण तैयार करते हैं। इन प्रकरणों को **'सम्बन्धित या जुड़े पाठों'** (Linked lessons) के नाम से पुकारा जाता है। प्रकरण विधि के निम्नलिखित गुण हैं–

1. इसके द्वारा छात्रों को एकीकृत या समेकित ज्ञान (Integrated knowledge) प्रदान किया जाता है।

2. अधिगम जीवन तथा पर्यावरण से सम्बन्धित रहता है।

3. छात्रों की रुचि जाग्रत रहती है।

4. विभिन्न विषयों से सह-सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

5. छात्रों की आयु, योग्यता तथा अभिवृत्ति के अनुकूल इसको अपनाया जा सकता है।

3. समस्या आधारित (Problem Based)—इस विधि के अनुसार अर्थशास्त्र की पाठ्य-सामग्री को छात्रों की आवश्यकताओं के आधार पर संगठित किया जाता है। इस प्रकार से संगठित करने से अधिगम का एकीकरण सरलता से होता है। साथ ही छात्रों को ऐसा ज्ञान, समझदारी, मूल्य तथा कौशल आदि प्राप्त होते हैं जो उन्हें समाज के हित के लिए प्रभावी योगदान हेतु सक्षम तथा कुशल बनाते हैं। साथ ही छात्र अधिक सक्रिय बने रहते हैं। इस आधार पर संगठित पाठ्यवस्तु के शिक्षण के लिए आधुनिकतम शिक्षण-विधियों एवं प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

उपर्युक्त विधियों के अतिरिक्त पाठ्य-वस्तु को संगठित करने के लिए निम्नलिखित बातों को भी ध्यान में रखा जाये—

1. सह-सम्बन्ध का सिद्धान्त (Principle of Correlation)—अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु को इस प्रकार संगठित किया जाये जिससे उस सामग्री का नागरिकशास्त्र, भूगोल, इतिहास तथा दूसरे सामाजिक विज्ञानों एवं विद्यालय-पाठ्यचर्या के अन्य विषयों से सम्बन्ध स्थापित किया जा सके। यह सम्बन्ध शीर्षात्मक एवं अनुप्रस्थीय, दोनों प्रकार से स्थापित होना चाहिए। विषय के विभिन्न अंगों का परस्पर सम्बन्ध शीर्षात्मक सम्बन्ध कहलाता है। इस प्रकार का समन्वय दूसरे प्रकार से भी स्थापित किया जा सकता है, जैसे—एक कक्षा में प्राप्त की हुई सामग्री दूसरी कक्षा की सामग्री को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती है। जब पाठ्य-वस्तु का दूसरे विषय की पाठ्य-वस्तु से पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है, तब वह अनुप्रस्थीय सम्बन्ध कहलाता है। अर्थशास्त्र की पाठ्यवस्तु का इस प्रकार संकलन करना चाहिए, जिससे बालक दोनों प्रकार के सम्बन्धों का लाभ प्राप्त कर सकें तथा पाठ्य-वस्तु को सरलता एवं सुगमता से ग्रहण कर सकें।

2. अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु के संगठन का एक अन्य आधार परिस्थिति (Situation) है। इसका तात्पर्य यह है कि उसके संगठन में उन ठोस परिस्थितियों को आधार बनाया जाये जिनके सम्पर्क में बालक रहता है। इस प्रकार उसका अध्ययन जीवन की परिस्थितियों से आरम्भ किया जाना चाहिए। उसका अध्ययन राष्ट्र तथा अन्तर्राष्ट्र से प्रारम्भ न किया जाये, अपितु स्थानीय परिस्थितियों को आधार बनाकर प्रारम्भ करना चाहिए।

3. अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु का संगठन इस प्रकार किया जाये, जिससे बालक शिक्षा से स्थानान्तरण के लाभों से वंचित न रह सकें।

4. अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम में पुनरावृत्ति के लिए भी स्थान होना चाहिए। यह इसलिए आवश्यक है कि इसकी पाठ्य-सामग्री में बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिनका अध्यापन प्रारम्भ में अनिवार्य है परन्तु उस समय उनके विषय में विशिष्ट ज्ञान नहीं दिया जा सकता, क्योंकि यह बालकों के मानसिक स्तर से बहुत उच्च होगा।

Scanned with CamScanner